पेननिसुलर रॉक 'अगम'

हाल ही में, **भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc),** बंगलूरु के शोधकर्त्ताओं द्वारा उन विभिन्न पर्यावरणीय कारकों (शहरीकरण सहित) को समझने के लिये एक अध्ययन किया गया है जो पेननिसुलर **रॉक अगम/दक्षिण भारतीय अगम** की उपस्थिति को प्रभावित कर सकते हैं।

पेननिसुलर रॉक अगम:

//

- **परिचय:**
    - **पेननिसुलर रॉक अगम (वैज्ञानिक नाम– समोफिलस डॉर्सालिस)** एक प्रकार की उद्यान छिपकली है, जिसकी उपस्थिति **दक्षिणी भारत में मुख्य** रूप से देखी जा सकती है।
    - इस **छिपकली का आकार अपेक्षाकृत रूप से बड़ा** है, जो नारंगी और काले रंग की होती है।
    - ये अपने शरीर से ऊष्मा उत्पन्न करने में सक्षम नहीं होती हैं, इसलिये **इन्हें बाह्य स्रोतों जैसे सूर्य के प्रकाश से गर्म चट्टानों अथवा मैदानों से ऊष्मा** प्राप्त करनी पड़ती है।
- **भूगोल:**
    - यह मुख्य रूप से भारत (एशिया) में पाई जाती है।
        - भारतीय राज्य **तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, बिहार** छिपकली की बहुतायत आबादी देखी जाती है।
- **प्राकृतिक वास:**
    - यह प्रीकोशियल **प्रजाति** के अंतर्गत आता है।
        - प्रीकोशियल प्रजातियाँ वे हैं जिनमें जन्म के क्षण से ही अपेक्षाकृत परिपक्व और घूमने-फिरने में सक्षम होते हैं।
- **सुरक्षा की स्थिति:**
    - **IUCN रेड लिस्ट** : कम चितनीय
    - **वन्य जीवों एवं वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन** : लागू नहीं
    - **वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972** : लागू नहीं

छिपकली के बारे में:

- रॉक अगम संकेत कर सकती है कि शहर के कौन से हिस्से गर्म हो रहे हैं और उनकी संख्या बताती है कि खाद्य जाल कैसे बदल रहा है।
    - छिपकलियों को बाहरी स्रोतों जैसे गर्म चट्टान या दीवार पर धूप वाले स्थान से गर्मी की तलाश होती है क्योंकि वे अपने शरीर से गर्मी उत्पन्न नहीं करती हैं।

- ये छपिकलयिाँ कीड़े खाती हैं तथा स्वयं रैप्टर, साँप और कुत्तों द्वारा खा ली जाती हैं, वे उन जगहों पर नहीं रह सकतीं जहाँ कीड़े नहीं होते हैं।
  - **कीड़े** स्वस्थ पारसि्थतिकिी तंत्र के **महत्त्वपूर्ण घटक हैं** क्योंकि वे परागण सहति कई सेवाएँ प्रदान करते हैं।
  - इसलयि रॉक अगमों की उपस्थिति पारसि्थतिकिी तंत्र के अन्य पहलुओं को समझने हेतु महत्त्वपूर्ण मॉडल प्रणाली प्रस्तुत करता है।

स्रोत: द हिंदू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/peninsular-rock-agama